# GRAM GAURAV SANSTHAN

## ANNUAL REPORT

# यह रहे जतन

# 2018-2019

## FROM THE DESK OF SECRETARY

वित्तिय वर्ष 2018–19 की ग्राम गोरव संस्थान की वार्षिक कार्य प्रगति को लिपीबध्द करके जब प्रस्तुत कर रहा हू तो कार्य कि बुनियाद का ताना बाना अपनी युवा अवस्था के प्रथम चरण 20–22 वर्ष की उम्र से जुडता है इस उपर में सम्माननीय श्रीसिध्दराज डड्डाजी, श्रीअनुपम मिश्रजी सहित अनेको सम्माननीय मार्गदर्शको ने ग्रामीण आजिविका सुदृढ करने के शाश्वत् प्रयासो की ओर अग्रसर किया ग्रामीण आजिविका की बुनियाद समाज मे चेंतना जागृत करके ग्रामीण समाज की आजिविका सुदृढ करने में सहायक पौराणिक विधियो को समाज के मानसपटल पर उभारकर समाज ही इन विधियो के अनुरूप अपने आप को कर्त्ता कायम करे, इसके लिए समाज को प्रेरित कर समाज की छुपि हुई क्षमता को उभारकर गावो में जनतांत्रिक व्यवस्था कायम करके अपने जीवन के तीन दशक पूरे किये है ग्राम गौरव संस्थान के 2018–19 कार्यो में हर वर्ष की भाति अपने प्रयासो की अविरलता देखकर अपने आप को संतुष्टि मिलती है गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली राज्य को जोड़ने वाली अरावली पहाड की श्रुंखला हो चाहे राजस्थान का मरूस्थल या माड़ क्षेत्र हो सब जगहो पर कुशलता का सूत्र बिखरा पडा है चाहे स्थान विशेष की समर्थ अवधी के रचनात्मक अवशेष अपने जीर्णक्षीर्ण अवस्था से पढाते हो या पिढी दर पिढी जनश्रुतियो व दादीनानी के किस्से लोक गीत व लोक आस्था ये सब सिखाती है, कुशलता की बुनियाद।

इस बिखरी हुई विरासत से सिख का संकलन करके वर्तमान समाज के साथ साझा करके कुशलता की नीव रखना ही शुभ व स्थायी सिध्द होती है इस सिख के खजानो से रूबरू होने का अवसर गुजराज के हिम्मतनगर से दिल्ली तक अरावली चेतना पद यात्रा, राजस्थान सहित कई राज्यो में संचालित अवैध खनन गतिविधियो के खिलाफ 90 के दशक के प्रारंभ के आंदोलन व सरिस्का अभियारण्य के संपूर्ण जैविक विविधता, वर्षाजल, वन संरक्षण के लिए सरिस्का की परिधि, बफर, कोर क्षेत्र में बसे ग्रामीणो के साथ संवाद स्थापित करके संरक्षण के लिए गांव की जनतांत्रिक व्यवस्थाए कायम करने पर प्राप्त हुए ग्राम गौरव संस्थान की मर्यादाए समाज के उत्थान के लिए रचनात्मक कार्यो की महेती आवश्यकता को प्राथमिता देता है संस्थान समाज को स्थानीय भू परिस्थितियो

व सामाजिक संरचना के अनुरूप अपने सर्वागिण विकास की बुनियाद का ताना–बाना तैयार करके अपने सामर्थ के साथ–साथ राज व अन्य जगहो से आवश्यक सहयोग पाकर अपने सर्वागिण विकास में स्वावलंबन का भाव स्थापित करते हुए कर्त्ता के रूप में सिध्द हो संस्था ने इस पहल के अनुरूप वर्ष 2018–19 में अपने कार्य क्षेत्र के ग्रामीणो के द्वारा तैयार की गई ग्रामीण योजनाओ से पंचायत राज सहित अपने जनप्रतिनिधियो को अवगत कराने के लिए प्रेरित किया ग्रामीणो के साथ उन आस्था स्थलो पर गहराई से मथन किया गया जिनके प्रति पूर्वजो की आस्था कायम हुई होगी उसके राज को समझने के साथ ही उन्हे चिन्हित करना और उस अवस्था के अनुरूप कार्य करने की विभिन्नता को समझा जिसके चलते ये स्थान तीर्थ स्थल कायम हुए डांग के ये सब स्थल यहॉ के वर्षाजल, मृदा, वन व संपूर्ण जैविक विविधता के संरक्षण से ही भव्यवान् रहे है ।

वर्ष भर में विभिन्न प्रक्रियाओ से समाज के साथ एक चेतनात्मक कार्य कि जो पहल रही है उसके संकलन के साथ रचनात्मक कार्यो को जोड़ते हुए संस्थान की कार्यप्रगति की प्रगति को प्रस्तुत करते हुए पाठको से जो अपेक्षाए उभरती है सामाजिक संरचना व भौगालिक प्ररिस्थितियो के अनुरूप समाज के सर्वागिण विकास की योजना उभारकर क्रियान्वति का स्वरूप ले इस पहल का विस्तार हो जिसमें पारदर्शिता, समाज में दायित्व भाव बढने के साथ–साथ समाज अपनी श्रमशक्ति व तकनीक पर कायम होते हुए कुशलता की ओर अग्रसर हो ।

**प्रेषक**

जगदीश

**सारांश (INTRODUCTION)** — ग्राम गौरव संस्थान ग्रामीण क्षेत्र कि आजिविका सूदृढ करने कि अपनी दृष्टि की परिधी में समाज को अपने स्थानीय प्राकृतिक संसाधनो के साथ पूर्वकता स्थापित करते हुए आगे बढते रहने के लिए अग्रसर करना है। प्रकृति के आबाद गतिमान संसाधन है चोंचदी जहॉ चुगा का पहले इन्तजाम करने वाली कहावत सिध्द होती है प्रकृति ने भरण पोषण से लेकर मनोरंजन, औषध से लेकर हिंसक जीवो से सुरक्षा तक का इन्तजाम किये हुए है मानव को अपने बौध्दिक सामर्थ का पुरूषार्थ अजमाने के लिए प्राकृतिक संसाधनो कि क्षमताओ को बढ़ाने में लगाना शुभ रहता है जब मंगलमय की भावना दिल से निकलती है तो सुरक्षित सारे संसाधन होना महसूस होता है पशु, मानव, नदी, नाले, पहाड़, खेत, खलीहान, रंग बीरंगे फूलो से सजी फूलवारी नाना प्रकार के फलो से लदे बगीचे अवीरल व निर्मल बहते झरने मरूस्थलीये धोरो का दर्श हो, कटीले वनो व खेजडी के नीचे विचरण करते हिरण व अन्य वन्यजीव नभ को गुन्जयमान् करते पक्षी यह सब द्रश्य कुशलता का प्रतीक है इस सब कुशलता को कायम रखते हुए धरती मॉ कि उपरी सतही ऊपज शक्ति को बढ़ाते हुए ग्रामीण आजिविका सूदृढ हो, इसके लिए ग्रामीण अंचलो में ग्राम गौरव संस्थान जन चेतना लाकर जनतांत्रिक व्यवस्था का गठन करके रचनात्मक कार्य कर रहा है ग्राम गौरव संस्थान ने वित्तिय वर्ष 2018–19 में संस्थान ने पूर्व वित्तिय वर्ष में तय किये हुए जल ग्रहण क्षेत्र के अंतिम 02 चरणो को पूरा करते हुए राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैक कि मार्गदर्शिका के अनुसार परियोजना तैयार कर नाबार्ड में प्रस्तुत की इस परियोजना में श्रमदान व सीबीपी प्लान लगातार 03 महीनो में पूरा हुआ, वाडी परियोजना से संबंधित मांगी जानकारीयॉ नाबार्ड को दी । डांग के कई गांवो मे संस्थान के सक्रिय कार्यकर्त्ता कर्णसिंह गुर्जर व अन्य साथियो ने नरेगा, ग्रामीणो के स्वयं व विधायक निधियो से वर्षाजल संचय वास्ते संरचनाओ का सर्वधन कार्य करवाया संस्थान ने अपनी परंपरा के अनुसार घंटेश्वर सपोटरा से महाराजपुरा मासलपुर तक 70 कि.मी. लंबी पदयात्रा करके समाज में वर्षाजल, वन व मृदा संरक्षण व उत्तम पशुपालन स्वच्छता व शिक्षा में गणना व गुणवत्ता बढ़ाने को लेकर इस यात्रा में संदेश दिया वर्षा ऋतु में संस्थान कार्यकर्त्ता गांव गांव में पहुचकर पूर्व में निर्मित वर्षाजल संरचनाओ का ग्रामीणो के साथ अवलोकन किया व आवश्यक जगह पर ग्रामीणो के संयुक्त श्रमदान से संरचनाओ की मरम्मद करवाई डांगवासियो के सर्वागिण विकास की जब अनेको राह पर विचार मंथन होता है तो कई रास्ते निकलते है जिसमें पर्यटन भी सहायक होता है पर्यटन के लिए यहॉ बहुत मन को मोहने वाले स्थल है जिनके झरनो व बगीचो को किसानो के खेतो में होने वाले ताल, पोखर, पैगारो का निर्माण से बहुत फायदा मिलेगा झरने अविरल होगे इससे होने वाली नमी से सघन जंगल होगा सघन जंगल व पेयजल उपलब्ध होने पर संपूर्ण जैविक विविधता फले फूलेंगी जिससे पर्यावरण संतुलित होगा ऐसे स्थलो को भी संस्था ने सूचिबध्द किया है। डांग के बालको की शिक्षा की गुणवत्ता व गणना बढ़ाने के लिए वंडररूम संचालित किये है वंडररूम में बालको की हस्तकला अभिव्यक्ति उभारने के साथ–साथ दिल्ली जैसे शहर में भ्रमण करवाना दिल्ली में ऐतिहासिक दृश्यो को दिखाया और मेरी संसद जैसे शैक्षणिक कार्यक्रमो में शामिल किया शहरी बालको से रूबरू करवाया और शहरी बालको को ड़ाग मे लाकर डांगवासी व संस्थान के आपसी आर्थिक व तकनीकि सहयोग से जटील जगहो पर निर्मित ताल, पोखर, पैगारो, से धान, गेहू, सरसो की फसल में हो रही बढ़ोतरी से रूबरू करवाया । राजस्थान राज्य कि विधानसभा के चुनावो के पूर्व ग्रामीण समाज में अपने लोकप्रिय जनप्रतिनिधि उम्मीदवार को अपने गांव में आने पर अपने गांवो के स्थाई

रोजगार व खाद्यान, पेयजल आपूर्ति वास्ते डांग के अनुसार वर्षा जल मृदा संरक्षण के लिए ताल, पोखर, पैगारा निर्माण करवाने का वादा करवाने के लिए आग्रह करने के लिए समाज को प्रेरित किया डांग में आय के साधनो में पशुपालन भी अहम भूमिका रखता है ग्राम गौरव संस्थान ने बकरी पालन को लेकर समाज में एक जुम्बिस खडी करने का कार्य शुरू किया। ग्राम गौरव संस्थान के गठन करने की आवश्यकता कराने वाला प्रेरणा स्त्रोत कार्य जिसके नीवं रखने का आधार समाज के सर्वागीण विकास में स्थानीय समाज कि समझ संस्कृति आस्था को साझा करते हुए रचनात्मक कार्य हो ऐसी प्रेरणा पाकर नेतृत्व कर्त्ता जिन्होने डांग सहित कई अन्य जगहो पर चेतनात्मक व रचनात्मक कार्य करके आज ग्राम गौरव संस्थान को उसी तर्ज पर कार्य करने में समर्पित कर रहे है उनके उन कार्यो का प्रभाव आंकलन फार्म भी भरे गये, 40 गांव में दिवार लेखन करके वर्षाजल संचय, स्वास्थ्य, शिक्षा और विकास की एजेन्सीयो द्वारा होने वाले रचनात्मक कार्यो में पारदर्शिता के लिए समाज सचेंत रहे का सदेंश दिया । राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैक कि देश भर के राज्यो से चिन्हीत जिलो के लिए एकीकृत जल प्रबंधन को लेकर कि गई सभाओ के अनुसार करौली जिले के 05 गांव कि परियोजना बनाकर नाबार्ड को प्रेषित कि ।

**जलग्रहण क्षेत्र** :– राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैक शाखा जयपुर के साथ वर्ष 2017–18 में एक जल ग्रहण क्षेत्र विकसीत करने की योजना तैयार करने का कार्य प्रारंभ किया ऐसा क्षेत्र चुनने के लिए संस्थान ने कई दिन भ्रमण करके तय किया इस क्षेत्र में बेहद घटता भूजल व उजड़ते चरागाह ैब्ए ैज्ए व्ठब्ब वर्ग की आबादी का गन्तव्य घटते भूजल से गांव में बढ़ती बेरोजगारी से लोग खनन कार्य से जुड रहे है जिनको सीलोकोसीस जैसी बिमारियो का सामना कर पड़ रहा है यह क्षेत्र हिण्डोन तहसील के खानवाड़ा, कोटराढहर गांव का चुना गया इस परियोजना को तैयार करने का संस्थान के समर्पित कार्यकर्त्ता राधाकिशन के समन्वयक नेतृत्व में संस्थान कार्यकर्त्ता रामस्वरूप, गिरिराज, शिवराम, ठाकुरसिंह, रामभजन, समयसिंह किया गया परियोजना के कई चरण 2017–18 मे पूरे कर लिये गये पर 03 चरणो का कार्य 2018–19 में पूरा किया जिसमें ब्ठच् च्संद जो जगातार 03 महिने के अथक प्रयासो में पूरा हुआ हर घर से 04 दिन का श्रमदान कार्य करवाया गया जिसको लेकर बहुत सी नुक्कड़ सभाए करनी पड़ी हर घर से श्रमदान करवाकर 02 तालाबो का सर्वधन करवाया 10 दिवस लगातार लगकर परियोजना की क्च्

तैयार करके नाबार्ड के शाखा जयपुर में जमा करवाई समय–समय पर मांगी जाने वाली अन्य जानकारिया व परियोजना से संबंधित जानकारी के लिए सुश्री नीलम मेंडम नाबार्ड से आने पर उन्हे पूरा ब्ठच् च्संद वाला क्षेत्र दिखाया एवं वहॉ होने वाली गतिविधियो से अवगत कराते हुए अप्रैल, मई, जून के महीनो में क्षेत्र का भ्रमण ग्राम संगठन के सदस्यो के साथ करके कहॉ पोखर बनानी है, कहॉ मेड़ बनेगी, कहॉ लूज स्टोन ब्रेकर बेनेगे, कहॉ घास लगेगी, कहॉ कून्टर बनेगी, कहॉ स्ट्रेन्च बनेगी आदि को समझाया, राधाकिशन के नेतृत्व में सुश्री नीलम मेड़म के साथ ग्राम संगठन के सदस्यो की बैठक हुए जिसमें परियोजना को लेकर विस्तृत चर्चा हुई जिसमें नीलम मेड़म के कई सवाल इस बैठक में आये जिसमें कुछेक का जवाब बैठक में दिया गया कुछ का जवाब अनुसंधान के बाद पत्र के द्वारा प्रेषित किया गया परियोजना के चरणो के अनुसार जल ग्रहण से संबंधित संदर्भ श्री राजे ा मीणा ने भ्रमण किया मीणाजी ने क्षेत्र का भ्रमण करके क्षेत्र को समझा ग्रामीणो से वार्ता की

| माह | कार्य का विवरण | संख्या |
|---|---|---|
| अप्रैल | 01. खानवाड़ा, कोटराढहर जलग्रहण विकास क्षेत्र में नाबार्ड द्वारा सी.बी.पी. प्लान में शामिल वास्ते ग्राम गौरव संस्थान को आमंत्रण पत्र देने पर संस्थान् द्वारा समुदाय के साथ नुक्कड बैठको एवं ग्राम सभा करके लोगो को जलग्रहण विकास क्षेत्र से होने वाले लाभ कि जानकारी साझा कि एवं इस समाज हितैशी कार्य के पक्ष में वातावरण निर्माण किया | 08 |
| | 02. जलग्रहण विकास क्षेत्र खानवाड़ा के मेप समुदाय के साथ तैयार किये ।<br> <br> | 05 |

| | | |
|---|---|---|
| मई | 01. खानवाड़ा, कोटराढहर जलग्रहण विकास क्षेत्र में नाबार्ड द्वारा सी.बी.पी. प्लान में शामिल वास्ते ग्राम गौरव संस्थान को आमंत्रण पत्र देने पर संस्थान् द्वारा सी.बी.पी. प्लान से पहले 04 दिवसीय श्रमदान हेतु समुदाय के साथ लगातार संपर्क कर जल संरचनाओ में (बगुला कि पोखर (कोटरा ढहर), इंक्स्यान कि पोखर(खानवाड़ा), खार कि पोखर (बदनपुरा) में श्रमदान करवाया।<br> <br> | 03 |
| | 02. जल ग्रहण क्षेत्र में सी.बी.पी. प्लान वास्ते जगह चिन्हित करने के लिए समुदाय के साथ बैठक । | 07 |
| | 04 नाबार्ड के सहयोग से होने वाले वाड़ी परियोजना वास्ते नाबार्ड कार्यालय को क्षेत्र से जानकारी जुनकारी जुटाकर पत्र प्रेशित किया । | 01 |
| जून | जल ग्रहण विकास क्षेत्र में सी.बी.पी. प्लान में कार्यो कि समुदाय के साथ अनुमानित नाप कि एवं अनुमानित बजट तैयार किया । एवं नाबार्ड को सी.बी.पी. प्रपोजल सबमिट तैयार करने वास्ते प्रपोजल फाईल तैयार कि । | 01 |
| | नाबार्ड कार्यालय द्वारा वाडी परियोजना के संदर्भ में मांगी गई ग्राम गौरव संस्थान कि पी.आई.ए डाटा शीट तैयार कर नाबार्ड कार्यालय में जमा कि । | 01 |

**वाड़ी** :– वाड़ी परियोजना करौली जिले की सपोटरा तहसील की एकट ग्राम पंचायत के गांवो को चिन्हित करके वर्ष 2017–18 में नाबार्ड की मार्गदर्शिका के अनुसार ST वाला क्षेत्र खेत व पानी की उपलब्धता समाज का जनतांत्रिक संगठन होने की सभावना वाला क्षेत्र चुना गया जिसमें विस्तृत जानकारी एकत्रित करके नाबार्ड को प्रेषित की जा चुकी थी परियोजना के चरणो के अनुसार 2019 में भी नाबार्ड द्वारा डी.डी.एम सवाई माधोपुर का भ्रमण, ग्रामीणो के साथ बैठक करवाई समय–समय पर नाबार्ड डी.डी.एम आफिस सवाई माधोपुर में पहुचकर परियोजना के स्विकृति पर होने वाली उन्नति से परिचित हुए नाबार्ड के द्वारा मांगी जाने वाली सभी सुचनाए क्षेत्र से एकत्रित कर प्रेशित किया इस परियोजना का समन्वयक समयसिंह गुर्जर व अन्य साथियो ने परियोजना स्विकृत होकर ग्रामीणो की आजिविका सूदृढ हो इसके लिए प्रयासरत् रहे।

**पदयात्रा** – ग्राम गौरव संस्थान के उद्गम की स्थिति पैदा करने वाला चेतनात्मक व रचनात्मक काम का उद्गम पदयात्राओ से फैला है ग्राम गौरव संस्थान हर वर्ष चतुरमासा मे एक पदयात्रा करता है संस्थान संपूर्ण डांग के गांव सहित अन्य क्षेत्रो तक भी पदयात्रा करता है अपने कार्यक्षेत्र के गांव में गठित ग्राम संगठनो के साथ व अन्यत्र गांव में जनसमुदाय की सुविधा के अनुसार नुक्कड सभा, सामुहिक सभा करके राष्ट्र निर्माण में पौराणिक उत्तम संस्कारो को आधुनिक शिक्षा पध्दति के उत्तम गुणो को साझा करके आने वाली पिढी को संस्कारवान् बनाने का आगाह समाज से करते है आजिविका सूदृढ हो इस पर सूदृढ आजिविका के लिए निकले उपायो कि क्रियान्विति हो इसके लिए बैठको में मन्थन होता है ग्राम गौरव संस्थान ने वर्ष 2018–19 में सपोटरा के घंटेश्वर से मासलपुर के महाराजपुरा गांव तक दिनांक 08.09. 2018 से 15.09.2018 पद यात्रा आयोजित की इस पदयात्रा के दौरान निचे लिखे गांव में निम्न पद यात्रियो द्वारा निम्न मुद्दो पर संवाद हुआ ।

| क्र | दिनांक | पद यात्रा के संपर्क गांव | पद यात्रा दल के सदस्य | नुक्कड बैठक | ग्राम संगठन बैठक / सामुहिक समारोह | संभागियो द्वारा संबोधन अंश | पद यात्रा के दौरान ग्रामीनो द्वारा संबोधन अंश |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 01 | 08.09.18 | घंटेश्वर तिर्थस्थान से चोडक्या कला | रामभजन, रामस्वरूप, शिवराम, जगदीश | 01 | — | रामस्वरूपजी ने घंटेश्वर स्थान पर उपस्थित दर्शनार्थियो को अपनी पदयात्रा का उद्देश्य समझाते हुए कहॉ हमे सरकारी, गैरसरकारी विभाग कि एजेन्सीयो के निर्माण कार्यो में पारदर्शिता कायम करवानी होगी । | मठ के महन्त ने इस पद यात्रा के उद्देश्य को समय कि आवश्यकता बताते हुए इस कार्य को समर्पण के साथ निभाने का आगाह किया ग्रामीण रामसिंह नें पदयात्रा कि उत्तम पहल बतायी अपने घर रात्री विश्राम करवाया । |
| 02 | 09.09.18 | चोडक्याखुर्द, रावतपुरा, कुडकामठ, एवं मोरोची | रामभजन, जगदीश, शिवराम, रामस्वरूप | 02 | | जगदीशजी ने चौडिक्याखुर्द में नुक्कड सभा को संबोधित करते हुए ड़ाग कि भौगोलिक स्थिति के अनुसार ताल, पोखर व पैगारा बनवान पर किसानो को अनुदान मिले इसके लिए ड़ाग से जुडे विधायक सरकार में कानून बनाये, ऐसी पहल के लिए लोगो को चैताया । | चौडिक्याखुर्द के ग्रामीण गजानंद, रामनाथ, रामनिवास मीणा, ने पदयात्रा का स्वागत करते हुए कहॉ हम ड़ाग वासियो के जीवन स्तर को ऊचा उठाने वाली पहल का संदेश है आप कि यात्रा का संस्थान के चेतनाकार्यो से ड़ाग में बने ताल, पोखर, पैगारो ने काया पलट कर रहे है भ्रष्टाचार, कुपोशन व चिन्ता मिटा रहे है । |
| 03 | 10.09.18 | मोरोची, झिलनकापुरा, खिजूरा | रामभजन, जगदीश, शिवराम, रामस्वरूप जगन्नाथ | 02 | सामुहिक समारोह के यात्रा का उद्देश्य | मोरोची एवं खिजूरा में लोगो के साथ पदयात्रायो ने जनसमुदाय को पदयात्रा के उद्देश्यो से अवगत करवाते हुए कहॉ अब समय आ गया है जिसमें हमारे शासनाध्यक्षो से हमारी परिस्थितीयो के अनुसार कानून बनवाकर अपने खेत पानी, पशुधन, स्वास्थ्य और शिक्षा के | मोरोची से रामस्वरूप, घनश्याम झिलनकापुरा ने यात्रा दल का स्वागत किया और यात्रा के उद्देश्य सुनकर सहारा और यात्रा के अनुरूप आने वाले चुनावो में उम्मीदवारो को ताल, पोखर, पैगारा निर्माणो में अनुदान का कानून बनवाये इसके लिए पहल करने का कहॉ । खिजूरा में मूलचंद, रमेश, गिरधारी, पूर्वसरपंच ने कहॉ कि हमको हि सचेत |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | कानून बने ओर सरकारी कर्मचारियो को काम में लेवे । | रहकर अंगमेहनत से काम करना होगा और आज के राजनेताओ में इतनी अच्छी समझ विकसीत होना बहुत कठिन कार्य है। |
| 04 | (अ) 11.09.18 | गोंदरभुरा, लखरूकि, खातेकि, अलबतकि, | जगन्नाथ, रामभजन, जगदीश | 01 | सामुहिक समारोह के पदयात्रा का उद्देश्य | अलबकि के बाबूमहाराज के स्थान पर लगने वाली जात में उपस्थित जनसमुदाय व रास्ते के गांव में नुक्कड बैठको में जगदीशगुर्जर ने कहॉ कि अपने खेतो को उपजाऊ बनाने व पशुओ को चारा एवं पेयजल वास्ते । स्वास्थ्य व शिक्षा के लिए अब जागृत होकर मेहनत करनी होगी साथ ही सरकार में भी ड़ाग के अनुसार कानून बनवाने के लिए जनप्रतिनिधियो पर दबाब बनवाने के लिए आगाह किया भ्रष्टाचार व अनावश्यक योजनाओ का विरोध जताया । | लखरूकी से हिरालाल पटेल, हुकूम मास्टर, बद्रीमीना, अलवत से हलकू पटेल, मंगलतुगडी, रामचरण ने अपने आने वाली पीढी के लिए बहुत जरूरी माना, भौगोलिक स्थिति के अनुसार विकास की योजना बनाने के लिए कानून बने और भ्रष्टाचार का विरोध करना बिना काम कि योजना बनवाने से भ्रष्टाचार पनपता है। |
| | (ब) 11.09.18 | राहिर, गजसिंहपुरा, आमरेकी, सेमरी, दौलपूरा, रायबेली, कुरतकी | ठाकुरसिंह, शिवराम, मांगीलाल, रामस्वरूप | 03 | | गजसिहपुरा, आमरेकी में नुक्कड सभाओ को संबोधित करते हुए शिवरामजी ने शिक्षा पर जोर देते हुए लोगो से अनुरोध किया कि आप अपने जनप्रतिनिधियो से दबाब ड़ालकर अपनी ड़ाग की भौगोलिक स्थिति के अनुसार कानून बनवाये जिससे किसानो को ताल, पोखर, पैगारो पर अनुदान मिले ।<br>रायबेली, दौलपुरा में घर–घर घुमकर लोगो का अपने मत का | गजसिंहपुरा के छोट्या गुर्जर, आमरेकी के नारायण खिलारी गोट्या व रमेश आदि लोगो ने पद यात्रा का स्वागत करते हुए ड़ाग विकास के कार्यो को अमल में लाने के लिए तैयारी दिखाई और पदयात्रा के उद्देश्यो को समाजहित में बतलाया । |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | सदुपयोग करने को कहॉ एवं खेती बाड़ी व शिक्षा पर ध्यान देने के लिए अवगत कराया । | |
| 05 | (अ) 12.09.18 | अलबतकी, चौबेकी, धादूरेत, करई, हरिनारायणका पूरा, जाखेर | जगन्नाथ, जगदीश | 01 | | जगन्नाथ एवं जगदीशजी ने चौबेकि में 20 लोगो कि बैठक में यात्रा के उद्देश्य को बताते हुए गांव में मृत पशुओ के कंकालो को गंतव्य स्थान पर ड़ालने के लिए कहां गांव कि गलियो में सामूहिक झाड़ू लगाने कि परंपरा बने जनप्रतिनिधियो से ताल पोखर, पैगारा व ड़ाग के अनुसार ड़ाग के विकास करवाने वाले कानून बने । | चौबेकि के श्रीपत् कर्णसिंह, धाधूरेत के महाराज, जाखेर के नरेश सहित एक दशक ग्रामीणो ने इस चेतना कार्य को गहरा व सतत् करने कि आवश्यकता महसूस कि । |
| | (ब) 12.09.18 | सोनपूर, बरूला, मांडीभाट एवं डोयलापूरा एवं झोपडी | मांगीलाल, शिवराम एवं रामस्वरूप | 02 | | मांगीलाल एवं शिवराम ने 20–22 लोगो के साथ साफ–सफाई, खेती में मेहनतकश एवं बच्चो कि पढ़ाई लिखाई कि चर्चा पर जोर देते हुए अपने जनप्रतिनिधियो से ड़ाग के विकास के लिए कानून बनवाने पर जोर दिया । डोयलापूरा में सरपंच श्रीधरजी से रामस्वरूपजी ने सरकारी योजनाओ कि लोगो कि जानकारी देने कि बात रखते हुए अपनी ग्राम पंचायत में अधिक से अधिक विकास करवाने के लिए प्रेरित किया । | लोगो ने पद यात्रीयो का मानरखते हुए उद्देश्यो को उचित ठहराया एवं ड़ाग में किये गये संस्था द्वारा किये गये संरचनाओ को समाज हित में बताया एवं अपने जनप्रतिनिधियो से ड़ाग में विशेष कानून बने इसके लिए मांग रखने को कहॉ । |
| | (अ) | भवरपूरा, | जगदीश, | | | जगदीश गुर्जर एवं जगन्नाथ शर्मा | नरेश गुर्जर, जतनसिंह, गणपत तुगड ने |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 06 | 13.09.18 | भंगीपूरा, अकोलपूरा एवं ससेडी | जगन्नाथ | | | ने ग्रामीण गणपत तुगड, नरेश, जतनसिंह के साथ कई गांव में पोखर, ताल पैगारा कि जगह देखी जो अति आवश्यक है। | पदयात्रा का स्वागत करते हुए ड़ाग के अन्यत्र गांव में हो रहे संस्थान के चेतनात्मक व रचनात्मक कामो कि अपने क्षेत्र में आवश्यकता जताई । अकोलपूरा में सुरेश जागा, राजा, विक्रम, भंगीपुरा में मुकेश मीना, राजपाल आदि ने पदयात्रा के उद्देश्यो को भारत देश कि जागृति बताईं, ससेड़ी ने प्रकाश, रामबाबू, सुरेश शर्मा, आदि ने संस्था के कार्यो को समाज हित में बताया । |
| | (ब) 13.09.18 | पाटोर, श्यामपुर, देवनारायण मंदिर, कसियापुरा | मांगीलाल, शिवराम, रामस्वरूप | | | श्यामपुर मंदिर पर लोगो से रामस्वरूप, मांगीलाल ने बताया कि ड़ाग विकास बोर्ड में पैसा आता है लेकिन लोग जागरूक नही है जिसमें लोगो को यात्रा के माध्यम से बताया कि डाग क्षेत्र में जनप्रतिनिधियो द्वारा सरकार से विशेष कानून बनवाकर डाग का उत्थान करे । ताल, पोखर, पैगारो पर माड़ क्षेत्र कि भांती अनुदान दिलवाया जाय । | पाटोर, श्यामपुर, देवनारायण मंदिर, कसियापुरा में लोगो ने पदयात्रा का स्वागत करते हुए अपने जनप्रतिनिधियो से बात रखने के लिए मंशा जताई जिनमें लक्ष्मीचंदजी ने कहा कि सरकार के नियमों का लोगो का पता हि नही फिजूल खर्ची कि छोटी–छोटी योजनाए चलाकर लोगो को जानबूझ कर भ्रमित किया जा रहा है। |
| 07 | (अ) 14.09.18 | ससेड़ी | जगन्नाथ शर्मा | 01 | | हमारे ड़ाग क्षेत्र को सरकार में विशेष दर्जा दिया जाना चाहिए जैसे मांड क्षेत्र में खेत, तालाईयो पर सरकार अनुदान देती है उसी तर हमारी ड़ाग में ताल, पोखर, पैगारा निर्माण में व पहाडी के उबड़–खाबड नालों के अनुसार सिमेंट रोड बने, विद्यालयो में विशेष निरीक्षण व्यवस्था हो । | नरोत्तम, प्रकाश, रामबाबू, सुरेश,सीताराम, देवीलाल, रामफूल, दिनेश तेली, कल्यान सियाराम ने यात्रा के उद्देश्यो को ड़ाग के समाज के हित में बताया वास्तविक पहल माना । ग्राम संगठन बनाकर तन–मन से सहयोग करने का वादा किया । |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | (ब) 14.09.18 | तीनपोखर, राजपूर, कोट, कसैला, | रामस्वरूप, शीवराम, जगदीश | 02 | सामुहिक समारोह के यात्रा का उद्देश्य | तीनपोखर, राजपूर में शीवराम रामस्वरूपजी ने लोगो से पदयात्रा का उद्देश्य समझाते हुए शिक्षा स्वास्थ्य व खेती बाड़ी पर विशेष ध्यान देने का आग्रह किया व पसैला में धार्मिक आयोजन में गायक कलाकार रामधन दौलतपुरा वाले को हमारी पद यात्रा का उद्देश्य समझाते हुए जगदीशजी ने ड़ाग क्षेत्र के लिए हमारे जनप्रतिनिधि विशेष कानून बनवाकर ड़ाग का विकास करे इस बात पर जोर दिया । | गांव के लोगो ने पदयात्रा का आभार व्यक्त करते हुए संस्था कि पहल कि सराहना कि एवं लोगो ने उद्देश्यो पर खरा उतरने के लिए कोशिश करने को कहॉ । |
| 08 | 15.09.18 | हल्लीकापूरा, मनाखूर, महाराजपूरा | रामस्वरूप, शीवराम, जगदीश | 02 | | रामस्वरूप, शीवराम ने गांव गांव में आगाह किया कि आने वाली पिढियो को अच्छे संस्कार व अच्छें खेत व पेयजल व्यवस्था मिले एवं सफाई के प्रति जागृत रहने को कहा । जगदीशजी ने महाराजपूरा के एक सामूहिक कार्यक्रम यात्रा के उद्देश्यो को बतलाते हुए लोगो से कहा कि आप संगठित होकर अपने विधायक से डाग के लिए विशेष कानून बनवाने कि कोशिश करे जिससे ड़ाग के ग्रामीणो का जीवनयापन सुखमय हो, चलितचिकिस्ता वेन कि व्यवस्था कायम करवाये जिससे डागवासियो का जीवन सुखमय हो । | खुड़ा के पूर्व संरपच सहित लगभग 50 लोगो ने ग्राम गौरव संस्थान कि पहल को अति आवश्यक व महत्ववान् बताया । संस्थान के चेतनात्मक व रचनात्मक प्रयासो का दूधभरा प्रमाण बतलाया । |

**संरचना संभाल** :– संस्थान के कार्यकर्त्ता कार्यस्थल के गांव में सघन भ्रमण करके पूर्व में निर्मित जलसरंचनाओ का ग्राम संगठनो के सदस्यो के साथ अवलोकन करते है जिसमें मिट्टी की पाल में प्रथम बरसात के कारण हुई क्षती की मरम्मद के लिए कुटाई, दबाई, घास उगाना, अपराओ को संभालना, सिमेन्ट की दिवारो के आगोरो में कही नीवं से कोई क्षति हुई हो जिसमें मिट्टी की दबाई करवाना आदि कार्य किया जाता है इस वर्ष मांगीलाल, गिरीराज, शिवराम की एक टीम ने राजपुर, कोट, पसेला, तीनपोखर, टपरा, कसीयापुरा, श्यामपुर सहित दो दर्जन गांव में ग्राम संगठनो के साथ अवलोकन किया कर्णसिंह के नेतृत्व में जगन्नाथ पंडित, रामस्वरूप आदि कार्यकत्ताओ ने चौडियाकाखाता, बेहरदा, रावतकापुरा, पातीकापुरा, मौरोची, कुडकामढ, बिरमका, बामूदा, राहिर सहित तीन दर्जन गांव में अवलोकन कार्य को सम्पादित किया राधाकिशन, समयसिंह, रामभजन ने नरेकी, बरकी, दौलतीयाकि आदि गांव में किया ।

**डांग के भ्रमणीय स्थल** – उत्तरी पूर्वी राजस्थान के सवाईमाधोपुर, करौली, धौलपुर, भरतपुर की 08 तहसीलो को जोड़ने वाली अरावली की श्रृंखला है डांग के पूर्व में दक्षिण से उत्तर की और चंबल नदी बहती है चंबल और ड़ाग की दूरी के बीच की जगह को बीहड कहते है अरावली को सजाने और सवारने वाली वन सम्पदा व विविध प्रकार के झरणो में भी सजाने में पौराणिक काल से कोई कसर नही छोडी है समय की मार के चलते सुरक्षा व सहज रूप से आजिविका चल सके ऐसे इस स्तर पर छोटी–छोटी रियासतो वाले राजा महाराजाओ ने भी अपनी आवास स्थिली बनाकर कीलो (Fort) का भी निर्माण है जिसके अवशेष यहॉ कि खुशहाली को आज भी बया करते है समय कि मार ने यहॉ के समाज को भू सांस्कृतिकहीन करके यहा के वन संपदा को चौपट किया और आधी शताब्दी से छोटी ब्रज कि ख्याति प्राप्त डांग में चैन की बन्सी बजना बन्द होना शुरू होकर यहॉ निवास करने वाला समाज वर्षा कि कमी के कारण चारा पानी की तलाश मे मवेशी के साथ पलायन करने लगा है 02 शताब्दी के करीब से यहॉ मानवश्रम से इस डांग के गौरव को बढ़ाने में दूध, धान की उपलबध्दता बढाने वाली निर्मित संरचनाओ का चलन कम होते–होते ढप्प सा हो गया जिसके चलते धान और गेहू पैदा करने वाले खेतो एक छग पत्थर वाले नालो का स्वरूप ले लिया है ब्रज जैसे यहॉ के गायन आज भी बरकरार है । यहॉ ग्राम गौरव संस्थान ने समाज की आजिविका सूदृढ करने के अपने अभियान कि शुरूआत व नमूना स्थापित करने के लिए अपने अनुसंधान में डांग को चुना है जहॉ अभी आधुनिक विकास बहुत दूरी बनाये हुए है संस्थान ने अपने अनुसंधान में यहॉ के प्राकृतिक संसाधनो का संरक्षण व संवर्धन करके ही ग्रामीणो की आजीविका सूदृढ होना पाया संस्थान ने जनतांत्रिक व्यवस्था का गठन करके इन कार्यो को करके समाज को स्वालंबन कि और अग्रसर करने का प्रयास कर रहा है जनतांत्रिक व्यवस्थाओ के साथ हो रहे प्रयास काफी सफल व देखने योग्य है आज भी डांग क्षेत्र में मन को अच्छे शगुन देने वाले झरने व आध्यात्मिक काल में उन पथिक ऋषीयो के साधना स्थल ये झरने रहे है यहॉ के समाज की गायन में लेगी, प्रभाती, कन्हैया, गोट, बखान आदि आज भी प्रचलन में है रियासीत कालीन किलो के अवशेष लोकदेवी देवता आज भी देखने सवारने के योग्य है संस्थान ने वर्षा जल, वन व मृदा संरक्षण के कार्यो से आजीविका सूदृढ होने के साथ–साथ डांग का वैभव भी निखरता है इस और ध्यान आकर्षित करते हुए ग्राम गौरव के प्रेरणा स्त्रोतो के प्रयासो से महेश्वरा सहित कई स्थानो के जालागम क्षेत्रो में हुए कार्यो के प्रभावो को प्रकाश में लाये और ऐसे अन्य स्थलो को सूची बंध्द किया जिनके जलागम् क्षेत्रो में वर्षाजल, वन व मृदा संरक्षण के कार्यो से वहॉ के झरणे अविरल व निर्मल बहने लगेगे जिनकी नमी से सघन वन व संपूर्ण जैविक विविधता कि वृध्दि होगी एवं पर्यावरणीय संतुलन भी होगा इन कार्यो को समाज शासन, प्रशासन या स्वयं करे इसके लिए ग्रामीणो के साथ संवाद हुआ है।

**1.** बिलेश्वर – शंकर भगवान को विभिन्न नामो में समाज अपने आपको समर्पित करता है शंकर भगवान की ध्यान अवस्थाओं को भाप कर अनेको पहचानो से जाना माना जाता है आध्यात्मिक काल में यहॉ पर विलेश्वर अवस्था में जब शंकर भगवान रहे है वैसी मुद्रा का सकुन

देने वाली यह जगह है यहॉ पर अविरल झरणा बहता है एकान्त है अच्छा सकुन देने वाली जगह है जहॉ से चंबल व बनास नदी को भी सवारते है यहॉ पर कैलाश नाथजी के शिष्य नौ वर्ष में एक बार दो माह रहकर तपस्या करते है।

**2.** बालेश्वर –यह स्थान भी शंकर भगवान के एक मुद्रा के नाम से प्रसिध्द है शंकर भगवान के जब करने वाले महर्षि ऋर्षियो की तपोभूमि है पडोसी गांव के इस स्थान के भक्तो में अपनी मनोकामनाओ कि प्राप्ती फल पाकर अपने श्रृध्दा से कुटिया का निर्माण कराया यहॉ के प्रसिध्द महात्मा शीवचरणदासजी ने हनुमानजी की स्थापना कर आराधना कि है ।

**3.** घंटेश्वर – यह भी शंकर भगवान कि एक ध्यान अवस्था का एक स्वरूप का नाम है यहां भी झरणा बहता है सदैव से यहां पर एकान्त ध्यान तपस्या करने वाले ऋर्षि महर्षियो की स्थली रही है एक काल की एक घटना को लेकर इस स्थान के महात्मा ग्रामीणो कि जनश्रुतियो में रहता है रामठरा गांव के एक हिसक व्यक्ति नित्य शिकार करने जाता उनके रास्ते में उसी गांव का एक ब्राम्हण नित्य अपनी गाय को जंगल में चाराने व प्रातः छोड़ने जाता ब्राम्हण के रास्ते मे मिलने के कारण शिकारी को शिकार हाथ नही लगती ऐसी मान्यता शिकार नही होने पर उनके चिंत में बैठ गयी ब्राम्हण को रास्ते मे नही मिलने कि सख्ती से हिदायत दी ब्राम्हण ने अपना रास्ता बदल लिया और उसी दिन शिकारी ने भी यह सोचा कि ब्राम्हण निश्चित पहले वाले रास्ते मे ही मिलेगा सो उसने भी रास्ता बदल लिया दोनो फिर एक जगह हो गये शिकारी ने ब्राम्हण को गोली चलाकर खत्म कर दिया हिंसक व्यक्ति को श्राप लग गया वह जब भी भोजन पर बैठे तो भोजन मवाद हो जावे दुखी शिकारी ने जगह–जगह तीर्थ दर्शन किये लेकिन भोजन पाने में वही मवाद दिखती रही एक संत ने प्रायश्चित करवाया और जीवन भर में कभी शिकार नही करने कि हिदायत दी । हिंसक व्यक्ति ने अपने जीवन में जितनी शिकार की उनका प्रायश्यित किया वह व्यक्ति अहिंसक बना तब से इस क्षेत्र के आस–पास के गांव में शिकार करना बन्द करके शाकाहारी जीवन जीने वाले समाज का निर्माण हुआ । यहॉ जाने अंजाने में गलती होने के बाद प्रायश्चित करके जीवन में फिर गलती नही करने का सकून देने वाला स्थान माना जाता है।

**4.** **चूहाकि** – ग्राम हटियाकी तहसील सपोटरा जिला करोली में प्राचीन समय से संतो कि तपोस्थिली रही है यहॉ पर तपस्या करते–करते बाबा साधूराम ने जीवित समाधी लेने कि जनश्रुति है साधुराम बाबा कि जीवित समाधी लेने के स्थान पर श्रध्दालुओ का ताता लगा रहता है। तीनो तरफ से पानी रिसता है रिसने को चुहना भी करते है इस पानी को चुने कि करिश्याई बाबा कि समाधी को मानते है यहां देवबनी अच्छी फलीफूली है डांग का यह दृश्य देखने योग्य हमेशा रहता है मन को शांति मिलती है ।

**5. कुड़कामढ** – ग्राम निभैरा तहसील सपोटरा जिला करौली अरावली की कंदराओ के बीचो–बीच हजार वर्ष पुराना भवन बना हुआ है इस भवन को मढ कहते है यह ग्रहस्थी आवास से हटकर बना हुआ है यहॉ पर हवन पूजा करने के स्थान है इस मठ में नांगा बाबाओ का एकान्त में ठहराव व पूजा करने का स्थान माना जाता है यह बहुत ही मनोरम जगह है जहॉ झरणा बहता रहता है यहॉ वर्तमान में राधेपूरीजी पूजा करते है इनके अनुसार यहॉ के निर्माण के समय अवधि निम्न प्रकार से विक्रम संवत् 1114 में मठ की स्थापना हुई इस मठ की स्थापना गदडिया बाबा ने कि मठ में लक्ष्मीनारायण भगवान कि मूर्ति है मठ से झरणा के करीब कुडकेश्वर महादेव की पूजा होती है मठ की व्यवस्था वास्ते उस समय से ही 75 बीघा जमीन मठ के नाम है आनन्दपूरी, रामेदपुरी, बद्रीपूरी आदि संतो ने सपस्या की है महात्माओ कि समाधी स्थल पर बारह खंब की झतरी और एक सरोवर का निर्माण हुआ है जो आज भी सारे दृश्य के साथ देखने को मिलता है ऐसे स्थान पर गाय का पालन रहा है गाय के दूध दही छाज घीरत से बनने वाली औषधि के लिए हमेशा उपलब्ध रहता था मठ की गायो से पैदा होने वाले बैल हमेशा किसान को दिया था इन सबके चलते यह आस्था का स्थान रहा ।

**6** महेश्वरा – ग्राम रायबेली तहसील सपोटरा, जिला–करौली, व ग्राम बिरमका ग्राम पंचायत निभैरा के मध्य स्थित है यहॉ पर सैकडो मीटर के करीब उचाई से झराना गिरता है यह झरना बहुत ही आकर्षक दृश्य है यहॉ पर महेश्वरा (सबको आनन्द बाटने वाली अवस्था का शंकरजी का स्वरूप प्रतित होता है) के नाम से प्राकृतिक शिवलिंग है विविध प्रकार की वन सम्पदा है जिसमें अनेको प्रकार की खुशबू होने का भान होता है रात्री काल में अदृश्य रूप से पूजा पाठ होना भी प्रतित होता है इस स्थान पर हिंसक, शराबी या संग्रह करने वाले प्रवृति के संत का लगातार ठहराव नही रहता है ।

**7 भित्तीचित्र** – ग्राम अलबत कि तहसील मण्डारायल जिला करौली के किनारो कि कंदराओ के नालो में पौराणिक काल के समाज में अपने संसाधनो गाय, घोडे, भेड, बकरी, हल बैल, धान, गेहू, ताल–पोखर, पैगारा कि उपलब्धता को चित्रो द्वारा दर्शा रखा है जो देखने समझने योग्य है ।

**8 भोलाजी का स्थान** – ग्राम राहर तहसील मण्डरायल जिला करौली में शंकर भंगवान कि भोले स्वरूप में पुजा करने कि अवस्था मानी जाती है यहॉ पर शांत वृति के संत तपस्या करते है यहा पर प्राकृतिक शिवलिंग गहरा नाले वाला इस स्थान पर ग्रामीणो कि अटूट आस्था है चत्तरमासा के अन्त में यहॉ पर विशेष व्यंजन तैयार करके प्रसाद तैयार किया जाता है जिसमें देशी घिरत के मालपूए व दही घीर और घी एक साथ मिलाकर प्रसाद वितरण होता है जो अपने आप में अनोखा स्वादिष्ट प्रसाद है इसमें कई संदेश भोजन से संबंधित सुंचाक मिलते है।

**9 ऊटगिरी का किला** – यह किला ग्राम चौडियाखाता ग्राम पंचायत दौलतपुरा तहसील–सपोटरा के पास खंडहर अवस्था में स्थित है चौडियाखाता से लगभग 08 किलोमीटर दक्षिण दिशा में है इस किले को राजादिग्वीजय सिंह ने बनवाया जिसकी अवधि का कोई लेख नही है किले कि परीधि 08 से 09 किलोमीटर है किले में 03 गेट एवं 06 बुर्ज है किले के अंदर रानी का महल, तालाब, टाका एवं खाई आदि है । 50 वर्ष पूर्व उजड हुए किले मे बारूद खाना व ठाकुरजी का मंदिर शेष रहे सरकार द्वारा बारूद खाने को उसी किले के अन्दर ताल में ताल दिया गया व ठाकुर जी चौडियाखाता में स्थापना कि गई श्री बन्द्रीपटेलजी की जानकारी के अनुसार किले में 04 से 05 तोप व बारूदगोला, शीशा आदि सामान को लोगो ने लूट लिया ।

**10 मण्डरायल का किले** – ग्राम मण्डरायल तहसील मण्डरायल जिला करौली डांग व चंबल के बीच स्थित है यह भव्य किला बिहड डांग चंबल को सवारने वाला दुर्ग है किले का निर्माण लगभग 15सौ वर्ष पूर्व का अनुमान है यह जब अच्छि अवस्था में रहा होगा तो बैभशाली रहा होगा आज भी इस किले को देखते देखते थक जाते है लेकिन एक दिन में ठीक से नही देख पाते किले में शानदार पौर (दरवाजा) तलघर, 04 तालाब, किले के चारो तरफ परकोटा जिसमें लगभग 30–35 बुर्ज, बुर्जो में लडाई लड़ने के मोर्चे है इस किले से आला ऊदल कि कहानी जुडी हुई है।

**11 भित्तीचित्र कसियापुरा** – लोगो कि मान्यता के अनुसार हजार पांच सौ वर्ष पूर्व बंजारा जाती के लोगो द्वारा इस गुफा में माण्डणा (हाथ से बनाये हुए फूल) बनाये गये है जो आज भी देखने पर मन को सुकून देते है ।

**12. टपकाकी खोह** – करौली से मण्डरायल जाने वाले रोड़ से 08 किलोमीटर दूरी पर ग्राम राजपुर तहसीनल मण्डरायल में पहाड़ की कन्दराओ में स्थित जहा हमेशा पानी टपकता रहता है यहॉ पर आयुर्वेद के मसीहा मोजनाथ गिरी संत ने तपस्या कि है आज भी यह कन्दराओ में शोभाएमान स्थान है जहॉ जनसदैलाब लगा रहता है आज भी गुरूकृपा से लकवा जैसी बिमारी का इलाज यहा संभव है ।

**13. धमनीया कि खोह** – ग्राम मनाखुर, ग्राम पंचायत–चंदेलीपुरा, तहसील–मण्डरायल, जिला–करौली में स्थित है यहॉ पर अविरल झरणा बहता रहता है बादलपूर के राजा गोपालसिंह ने सन्यास लेकर तपस्या कि है यहां पर गोपालदासजी महाराज ने ठाकुरजी कि स्थापना कि है आगे चलकर बटुआदास महाराज हुए उन्होने घोर तपस्या कि तपस्या के प्रभाव से यज्ञ हवन व भण्डारों में घी की कमी आने पर बाबा के आदेश से गांव के लोगो ने झरने का पानी पीपो में भरकर उधार लिया व भण्डारे में काम लिया झरने के पानी में घी का काम किया व बाद में जितने पीपा पानी लिया उतने ही पीपा घी के लाकर गांव वालो में झरने में डाल दिया जो पानी में पानी हो गया व बटुआदास जी वन्यजीव प्रेमी भी रहे है व यहां कि विकदन्तीयो के अनुसार जंगल के शेर भी बाबा के पैर चाटते व छूते ।

**14. तिमनगढ का किला** – ग्राम आलमपुर भोजपूर सिंघनपुर तिलहैटी मासलपूर जिला–करौली में धौलपूर करौली हाईवे से व्हाया मासलपूर 20कि.मी उत्तर दिशा में स्थित है किले के निर्माण को लेकर अलग–अलग मान्यताए है पर स्थानीय ग्रामीणो के अनुसार श्री कृष्ण भगवान कि 68वी पीढी में 02भाईयो में अपना राज्य स्थापित किया विजय सिंह ने बयाना व तिमनसिंह ने तिमनगढ किले का निर्माण करके राज किया जनश्रुतियो के अनुसार और मूर्तियो के अवशेषो से प्रतित होता है कि तिमनसिंह राजा जैनधर्मावलंबी थे जहां पर लोहा तैयार करने कि भट्टिया व मूर्ति कला परचम पर रहा है आगे चलकर मोहम्मद गौरी ने यहॉ पर आक्रमण किया मोहम्मद गौरी के अचानक आक्रमण ने यहा के तत्कालीन राजा कि ही जीत बताई गई राजा को यहॉ विराजमान संत का आर्शिवाद रहा कहते है मोहम्मद गौरी की फौज पर अचानक पहाडगिरा और फौज को कुचल दिया यहा के सरोवर में आज भी पारसपत्थर का होना बताते है जिससे लोहा सोने तब्दील हो जाता है लोगे के कहे अनुसार आक्रमण के समय राजा ने पारस पत्थर को सरोवर पर विराजमान संत महाराज को भेट किया संतजी ने पारसमनी को तालाब में फेक दिया यह किला बहुत बडे क्षेत्रफल में उंचे पहाड पर बना हुआ है किले के मुख्य दरवाजे ही आज शेष बचे हुए है आज भी किले को देखने के लिए लोगो का आना जाना बना रहता है आज का समाज जेठ सुधी दशमी को मेला आयोजित करते है और गायन में अपने अपनी कलाओ को उभारते है पहाड़ में किला और नीचे सरोवर की उपस्थिति दर्शको का आकर्षित करती है।

**आंकलन प्रपत्र** :– ग्राम गौरव संस्थान का उद्‌गम जिन प्रेरणा स्त्रोत कार्यो से हुआ है उनकी बुनियाद में कार्यकर्त्ता निर्माण की प्रतिबंध्दता का वैचारिक पोषण पोषित रहा है 21वी सदी के प्रारंभ में राजीव गांधी फाउण्डेशन के राष्ट्र निर्माण में अपने बैनर नीचे अनेको चलाई जा रही कल्यानकारी परियोजनाओ के साथ ग्रामीणो की आजिविका सूदृढ करने के मिशन को भी जोड़ा मिशन के प्रारंभ में प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण को प्राथमिकता देते हुए तरूण भारत संघ के द्वारा अलवर जिले की कई तहसीलो के कई गांव में व सवाई माधोपुर जिले के मांड व करौली की डांग क्षेत्र में राजीव गांधी फाउण्डेशन के विचारो के अनुरूप कार्य में पारदर्शिता, गुणवत्ता, आवश्यकतावान्, समाज के अन्दर दायित्वभाव के साथ ग्राम संगठन का गठन करके समाज का आर्थिक व तकनीकि साझा करते हुए कार्य हो रहा था इस काम में लगे कार्यकर्त्ता काम के प्रति प्रतिबध्दता पारदर्शी, समर्पित, कौशलवान् नई पहल करने की क्षमता आदि के साथ कार्य को गतिमान् कर रहे इसी कार्यकर्त्ता समूह के नेतृत्व में एक बड़ी टीम खड़ी करके काम को व्यापक एवं सघन करने की सहयोग की भावना से राजीव गांधी फाउण्डेशन ने वर्ष 2001 नवम्बर माह से इस काम को बढ़ाना शुरू किया जो काम दौसा जिले कि कोचर पट्‌टी से लेकर सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर की डांग क्षेत्र, पाली बीकानेर अलवर जिले का नैहड़ व मेवात क्षेत्र, जयपुर जिले का जमुवारामगढ़ व अन्य क्षेत्र जैसलमेर आदि क्षेत्रो का वर्षा जल वन व मृदा संरक्षण का कार्य ग्रामीण जनतांत्रिक व्यवस्था खड़ी करके कार्य हुए इस कार्य में कई सौ लोग प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुडे आगे चलकर इन कार्यो कि अवरिलता को लेकर ग्राम गौरव का गठन हुआ ग्राम गौरव संस्थान के गठन के प्रेरणा स्त्रोत ही अब इस कार्य को ग्राम गौरव संस्थान के बैनर नीचे बढ़ा रहे है 2001 नवम्बर से 2018 तक निर्मित संरचनाओ के द्वारा ग्रामीणो की खाद्‌यान,पेयजल आपूर्ति के बढ़ने से बेरोजगारी, पलायन आदि में हो रहे सुधारो सहित अन्य हुए लाभ का प्रभाव जानकर इस दिशा में अन्य जगहो पर हो रहे प्रयासो में सहयोग के लिए एक जानकारी एकत्रित करने के लिए निर्मित संरचनाओ के प्रभावो का आंकलन वर्ष 2018–19 में प्रारंभ किया ।

**वंडररूम** :– ग्राम गौरव संस्थान अपने कार्यक्षेत्र के बालको कें संस्कार में अपने आस–पास के भूगोल के समझना भौगोलिक परिस्थितियो के अनुसार होने वाले सुदृढ आजिविका के आयामको को जानने पहचानने बालको की हस्तकला व अभिव्यक्ति को उभारने देश के एतिहासिक स्थानो को देखने समझने व शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए विद्यालय समय के समय के अलावा बालको को इस तरह के ज्ञान का वर्धन करने के लिए एक वंडररूम जैसी परियोजना संचालित कि है इस परियोजना से दिल्ली के पडोसी इलाको झुग्गी झोपड़ीयो में निवास करने वाले सुविधाजनक घरो में जन्म लेने वाले शहरी बालको को डांग व डांग जैसी अन्य जगहो पर जहॉ से उनके शहर सहित सम्पूर्ण देश के शहरो की रसद सामग्री जिन गांवो से पहुचती है उस रसद का उत्पादन शक्ति बढ़ाने के लिए ग्राम गौरव संस्थान व समाज के आपसी आर्थिक व तकनीकि सहयोग से हो रहे प्राकृतिक संसाधनो के हो रहे संरक्षण कार्यो से अवगत कराना भी है इस परियोजना में वर्ष 2018–19 में निम्न प्रकार कार्य हुए ।

| दिनांक | कार्य विवरण |
|---|---|
| 01.10.2018 | राजीव गांधी फाउण्डेशन व ग्राम गौरव संस्थान के आपसी अनुबंध के अनुसार उजैरजी एवं नामितजी के द्वारा स्विकृति की सूचना दूरभाष से मिली । शीघ्र ही कार्यकर्त्ताओ में काम की जिम्मेवारी बाटी । |
| 02.10.2018 | परिसर में आवासीय सुविधाओ को व्यवस्थित व विस्तारित करने पर होने वाले कार्यो को प्राथमिकता के अनुसार तय करके नये शौचालय एवं स्नानघर, रसोई के स्थानो को लेकर नामितजी एवं उजैरजी से बराबर संपर्क में रहकर तीन दिन में जगह तय कि गई । |
| 08.10.2018 | नए निर्माण के लिए काम में आने वाली सामग्रीयो का जाचपडताल करके उचित दुकान से संपर्क कर कुटेशन प्राप्त किये एवं श्रमिक व कारिगरो के साथ अनुबंध तय किया व सामान खरीदने का निर्णय किया गया । |
| 14.10.2018 | नीव भराई से कार्य कि शुरूआत कि गई । |
| 22.10.2018 | पूर्व महिने में तीन चयनीत गांवो के लिए 03 चयनित बंडररूम संचालको को राजीव गांधी फाउण्डेशन में प्रशिक्षण लेने के लिए भेजा । |
| 30.10.2018 | ग्राम संगठनो को वंडररूम कि दि गई जिम्मेवारियो के अनुरूप संचालन को लेकर बैठक की । |
| 01.11.2018 | ग्राम बाकूदा व ग्राम गौरव संस्थान सुक्कापुरा में वंडर रूम संचालित करवाये । |

| | |
|---|---|
| 09.11.2018 | पूर्व में संचालित जीवनशालाओ के अध्ययनरत् बालको को दिल्ली में आयोजित आई पाल्यामेंट में लेकर पहुचे जहॉ बहुत कुछ सीखने को मिला ।<br>1. संचालन करना ।<br>2. मुद्‌दा आधारित बहस करना ।<br>3. किस तरह बील पास होना आदि बालको ने देखा व सीखा । |
| 28.11.2018 | रात में सम्माननीय विजय महाजनजी निर्देशक/सी.ओ. राजीव गांधी फाउण्डेशन, सम्मानीय दीपक माथुरजी, सम्माननीय उजैरजी ने पधारकर परिसर में निर्मित कार्यो को देखा । |

**29.11.2018** वंडररूम से संबंधित खरीदे गये बिस्तरो सहित सारे सामान का बारिकी से अवलोकन करके वी.ए.साहब, माथुरजी, उजैरजी ने कार्य को सही दिशा में बताया ।

| | | |
|---|---|---|
| 14.12.2018 से 16.12.2018 तक | दिल्ली से श्रीराजूपासवानजी, अश्विनीजी, मैडम नीलम के नेतृत्व में करीब 20 बालको को लेकर ग्राम गौरव परिसर व ग्राम गौरव के कार्य क्षेत्र बामूदा में भ्रमण करवाया बालको ने ग्रामीणो द्वारा एक छत पत्थर वाली जमीन को द्विफसलीय खेती में परिवर्तित करने वाले पैगारा निर्माण कार्य व ठेट ड़ांग में बंजर भूमि को संचित भूमि में परिवर्तित करने वाले पोखर व तालों को देखा इन संरचअनो के निर्माण से गांव में आये परिवर्तन को गांव से मौखिक सुना जिसमें सबसे बड़ा जो भावी संकट होता है खाद्यान व पेय जल का, जिसका समाज संगठित होकर स्नेह भाव से पौराणिक काल से अब तक किस तरह से करता आया उसे ग्रामीण ने बताया । दिल्ली से आये बालको ने कहानी व नाटक प्रस्तुत करके ग्रामीणो को अभिव्यक्ति संगठित व न्याय पर चलने कि सिख दी । | |

**दिवार लेखन** – ग्राम गौरव संस्थान अपने रचनात्मक काम को ग्रामीण जनतांत्रिक व्यवस्था के साथ संपादित करता चला आ रहा है पर अपने काम कि अवधारणा कि व्यावकता को सहज रूप से ग्रामीण क्षेत्र के हर जन तक पहुचे इसके लिए गांव के नुक्कड बैठको के साथ गेरू से तरह तरह के (स्लोगन) नारे लिखकर चेतना जागृत करता है ।

नारे : – छोटे–छोटे करो संगठन छोटे छोटे काम । छोटे छोटे बांध बाधलो है राम हराम ।।

जलहिरा, जलजौहरी, जलजवाहरात। जल की शोभा जगत में जल बीन देश कंगाल ।।

जंगल में हरियाली होगी । घर घर में खुशहाली होगी ।।

ताल, पोखर और पैगारा । इनसे चलता जीवन हमारा ।।

**विधानसभा चुनाव** :– ग्राम गौरव संस्थान ने डांग के ग्रामीणो की आजिविका को सूदृढ करने के लिए अपने अनुसंधान में ताल, पोखर, पैगारा जैसी संरचनाओ का निर्माण करके पानी का संचय व मिट्टी का संरक्षण करने के तरीके पाये इन तरीको के प्रयोग करने पर दूध भरा परिणाम आ रहे है डांग से संबंध रखने वाली 08 विधान सभाओ के लोकप्रिय उम्मीदवार राजस्थान विधान सभा के 2018–19 के प्रत्याक्षीयो को डांग के विकास के लिए वैधानिक रूप से सरकार की और से ताल, पोखर, पैगारा निर्माण कि परियोजना संचालित करवाने के लिए अपने एजेण्डे में डांगवासियो से वादा करे इसके लिए डांगवासियो को संस्थान कार्यकर्त्ता को प्रेरित करके प्रेरित किया यह कार्य कर्णसिंह के नेतृत्व में ठाकुरसिंह, गिरीराज आदि कार्यकत्ताओ ने संचालित किया ।

पशुपालन :– ग्राम गौरव संस्थान अपने अभियान को सर्वागिण विस्तार देते हुए पशुपालन जो कि वर्षाजल, वन व मृदा संरक्षण के लिए हो रहे कार्यो से चारा और पानी बढ़ रहा है जिसके कारण पशुओ की खाद्यान व पेयजल आपूर्ति बढ़ रही है जिसके चलते दूध में बढ़ोतरी हो रही है, दूध एवं घी का उचित दर वाले बाजार को लेकर ग्राम गौरव संस्थान तलाश मे है ग्रामीण क्षेत्र में गाय, भैस के साथ–साथ बकरी व भेड़ का पालन अनिवार्य रहता है बकरी का दूध पौष्टिक व रोग–प्रतिरोधक क्षमता बढने की क्षमता रखता है बकरी पालन को लेकर ग्राम गौरव संस्थान 2018–19 मे ''द गोट ट्रस्ट'' साझा करते हुए गोटरी पालन एक परियोजना संचालित कर रहा है जिसके चलते अन्य जगहो पर बकरी पालन को लेकर हो रहे उचित प्रयासो का अपने कार्यक्षेत्र की महिलाओ का भ्रमण करवाया ''द गोट ट्रस्ट'' के कार्यालय लखनऊ में 02 कार्यकत्ताओ को पशुओ की बिमारी कि पहचान, प्राथमिकी उपचार सहित अन्य जानकारियो को लेकर प्रशिक्षण कराया 03 जिलो के 57

गांव में बकरी के दूध का सर्वे किया बकरी पालन मे 21 महिला सखियो का चयन किया इस कार्य को गिरीराज गुर्जर के नेतृत्व में शिवराम व अन्य ग्रामीण स्वच्छिक कार्यकर्त्ता पशुसखी आगे बढ़ा रही है।

**एकीकृत जल परियोजना** :– राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैक (नाबार्ड) देश भर के राज्यो के चिन्हीत जिलो के चिन्हित क्षेत्रो में जल को लेकर ग्रामीण समुदाय के साथ बैठको में संवाद किया है नाबार्ड के अनुसार उन गांवो में जल संरक्षण को लेकर समाज की जनतांत्रिक व्यवस्था का गठन करके रचनात्मक कार्य हो जिसमें ग्राम संगठन का गठन, ग्राम विकास समिति का गठन, समिति के राजस्व नक्शा जमीनो के प्रकार की समझ के साथ एक सर्वे हो जिसमे वर्षा जल,मृदा संरक्षण व चारागाह विकास के लिए क्या–क्या कार्य हो सकते है ग्राम गौरव संस्थान को नाबार्ड डी.डी.एम सवाई माधोपुर ने इस कार्यक्रम में साझा होने के लिए दिसम्बर 2018 में वार्ता की ।

आगे बढ़ते हुए नाबार्ड द्वारा ग्राम गौरव को एक पत्र साझा होने के लिए मिला नाबार्ड के द्वारा संवाद किये हुए गांव मे से ग्राम गौरव संस्थान के कार्यकत्ताओ ने भ्रमण करके 05 गांव का चयन किया, जिसमे जितकीपुर, दलपुरा, मांचड़ी, आंधियाखेड़ा, गुर्जरखेड़ा तय हुए इन गांवो में 47 नुक्कड सभाए करके ग्रामीणो को ग्राम गौरव संस्थान व नाबार्ड की मंशाओ से अवगत करवाकर ग्राम संगठनो के गठन के लिए प्रेरित किया ग्राम संगठनो के गठन हुए, ग्राम संगठनो में अपनी–अपनी ग्राम विकास समितियो का चयन किया ग्राम विकास समितियो के सदस्यो साथ राजस्व नक्शा, जमाबंदी व क्षेत्र की टोपोशीट आदि खरीद कर व सरकारी फिस जमा करवाकर प्राप्त की ग्राम विकास समितियो के सदस्यो के साथ नक्शा, जमाबंदी व टोपोशीट के अनुसार खेत तलाई, मेड बंदी, तालाब, ट्रेन्च आदि संरचनाओ कि जगह तय कि उनकी नापतौल कि, उन पर होने वाला कार्य तय किया गांव कि विस्तृत जानकारी, फोरमेट के अनुसार एकत्रित कि इन 05 गांवो के सारे काम को करने में 04 माह संस्थान के लगे संस्थानकी और से मांगीलालजी, शिवराम, गिरीराज, कर्णसिंह, रामस्वरूप, राघाकिशन, समयसिंह आदि कार्यकर्त्ता लगे रहे मार्च माह के अन्तिम सप्ताह में एक विस्तृत डी.पी.आर तैयार की ।

**स्वतंत्रता दिवस समारोह** :– ग्राम गौरव संस्थान के आश्रम परिसर में 15 अगस्त को हर वर्ष मनाया जाता है। सारी विधियों के अनुरूप झंडारोहण करने के साथ राष्ट्रगान गाया जाता है, उपस्थित गणमान्य नागरिकों के साथ हमारे उन महापुरुषों के बलिदान व समर्पण को याद करते हैं, जिन्होंने देश को आजादी दिलाई उनका त्याग,

बलिदान, समर्पण व्यर्थ नहीं जाने देंगे, इसके लिए उन्नत खेती, स्वस्थ पशुधन, संस्कारवान् वह मेहनतकश हमारी भावी पीढ़ी तैयार करेंगे, राष्ट्र एकता व सौहार्द के लिए सदैव कर्तव्य स्वरूप रहे देश से भ्रष्टाचार, वैमनस्यता फैलाने वाली अराजकता जैसी गतिविधियों को एकजुट होकर मिटाने पर बल दिया जाता है ।

**गणतंत्र दिवस समारोह** :–आश्रम परिसर में हर वर्ष 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाया जाता है । विधि पूर्वक झंडारोहण करके राष्ट्रगान गाने के बाद हमारे संविधान की पालना व रक्षा के लिए संवाद करके प्रकाश डाला जाता है ।

**प्रभाकांत जी का विजिट** :– धर्मपाल सतपाल फाउंडेशन के श्री प्रभाकांतजी ने डी.एस. फाउंडेशन के राज्य परियोजना अधिकारी रहे ग्राम गौरव संस्थान के कार्य क्षेत्र में भ्रमण करके काम व समाज से रूबरू हुए व डांग क्षेत्र की मूल समस्या व समाधान के लिए ग्रामीणों से चर्चा की गई साथ ही जल व मृदा संरचनाओं को देखा।

**राजेंद्र जायसवाल जी का विजिट** :– श्रीराजेंद्र जायसवालजी एक इंजीनियर है और उन्होंने ग्राम गौरव संस्थान व समाज द्वारा निर्मित जल व मृदा संरचनाओं को तकनीकी दृष्टि से देखा एवं संरचनाओं के लाभ के परिणाम को जाना । डांग में हुए इस कार्य की यहां की महती आवश्यकता को मानते हुए कार्यों की गुणवत्ता की प्रशंसा की गई ।

**नीलम मैडम एवं सोमेंद्र सिंह जी का विजिट** :– ग्राम गौरव संस्थान द्वारा मृदा व जल संरक्षण के समाज आधारित कार्य को वर्ष 2017–18 में खानवाड़ा जल ग्रहण क्षेत्र चयन हेतु नाबार्ड प्रतिनिधि श्री सोमेंद्र सिंहजी, राजेंद्र मीणाजी, श्रीमती नीलमजी द्वारा क्षेत्र भ्रमण कर कार्य की आवश्यकता को माना एवं पूर्व में हुए

पोखर, पैगारा के सिस्टम को समझा एवं यहां की भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार पैगारा जैसी संरचना निर्माण को बढ़ावा देने पर बल दिया गया साथ ही नाबार्ड से` खानवाड़ा जल ग्रहण क्षेत्र का चयन करवाया गया

**जर्मन बालकों का भ्रमण** :– ग्राम गौरव संस्थान द्वारा किए गए सुदृढ़ आजीविका कार्यक्रम को देखने व समझने के लिए जर्मनी से श्री राजवेंद्र सिंहजी के नेतृत्व में 40 बालकों के दल ने ग्राम कड़ीगावडी में निर्मित नकटाली एनीकट को देखा, एवं कार्य के निर्माण से लेकर संपूर्ण होने व समाज द्वारा किए गए सहयोग, समिति का कार्य, लेखा–जोखा व पारदर्शिता को समझा एवं गांव के विकास में समिति का योगदान, संस्थान की भूमिका आदि के बारे में जानकारी ली गई साथ ही ग्राम गौरव संस्थान परिसर का भ्रमण कर बैठक की गई जिसमें संस्थान के द्वारा किए जा रहे सभी कार्यो की जानकारी ली । व बच्चों ने इस राष्ट्र निर्माण में गांव का विकास एवं पर्यावरण संरक्षण कार्यों की प्रशंसा की । व जर्मनी में अपने स्कूल में इस अनुभव को साझा करने व ग्राम विकास में किए जा रहे प्रयासों की जानकारी देने हेतु वादा किया ।

**डी.डी.एम. मक्खन लाल जी का विजिट** :– ग्राम गौरव संस्थान द्वारा खानवाड़ा जल ग्रहण क्षेत्र विकास में किए गए चेतनात्मक व रचनात्मक कार्यों की समीक्षा करने के लिए नाबार्ड सवाई माधोपुर डी.डी.एम. श्री मक्खन लाल मीणाजी द्वारा क्षेत्र भ्रमण कर समिति के साथ बैठक की । श्रमदान करना, सी.बी.पी. सर्वे करवाने में सहयोग आदि पर चर्चा कर ग्राम गौरव संस्थान के कार्यों के बारे में बताया एवं ग्रामीण व संस्थान टीम के द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की गई ।